सत्रह

आत्मा के वरदान

The Gifts of the Spirit

बाइबल ऐसी घटनाओं से भरी हुई है जब स्त्री पुरुषों को अचानक ही पवित्र आत्मा की ओर से अलौकिक योग्यता को दिया गया। नये नियम में इन अलौकिक योग्यताओं को ''आत्मा के वरदान'' कहा गया है। वे इस भाव में दान हैं क्योंकि उन्हें अर्जित नहीं किया जा सकता है। तौभी, हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि परमेश्वर उन्हें ही आगे बढ़ाता है जिन पर वह भरोसा कर सकता है। यीशु ने कहा, ''जो थोड़े से थोड़े में सच्चा है, वह बहुत में भी सच्चा है; और जो थोड़े से थोड़े में अधर्मी है, वह बहुत में भी अधर्मी है'' (लूका 16:10)। अत: हम आशा करेंगे कि आत्मा के दान उन्हें दिये जाते हैं जो परमेश्वर के सम्मुख अपनी विश्वासयोग्यता को प्रमाणित करते हैं। पवित्र आत्मा से उत्पन्न होना और उससे जुड़े रहना बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि परमेश्वर इस तरह के लोगों का प्रयोग अलौकिक रूप से करता है। दूसरी ओर, परमेश्वर ने एक गदहे का प्रयोग भविष्यद्वाणी करने के लिए किया था, इसलिए वह जिसका चाहे उसका प्रयोग कर सकता है। यदि हमारे सम्पूर्ण होने के लिए उसे प्रतीक्षा करनी पड़े, तो वह हममें से किसी का भी प्रयोग नहीं कर सकेगा।

नये नियम में, 1 कुरिन्थियों 12 में आत्मा के वरदानों की सूची दी गई है, और वे कुल मिलाकर नौ हैं :

> क्योंकि एक को आत्मा के द्वारा बुद्धि की बातें दी जाती हैं; और दूसरे को उसी आत्मा के अनुसार ज्ञान की बातें। और किसी को उसी आत्मा से विश्वास; और किसी को उसी एक आत्मा से चंगा करने का वरदान दिया जाता है। फिर किसी को सामर्थ के काम करने की शक्ति; और किसी को भविष्यद्वाणी की; और किसी को आत्माओं की परख; और

किसी को अनेक प्रकार की भाषा; और किसी को भाषाओं का अर्थ बताना (1 कुरि. 12:8-10)।

प्रत्येक व्यक्तिगत वरदान को परिभाषित करना जानते हुए आत्मिक वरदानों में परमेश्वर द्वारा प्रयोग किया जाना कठिन नहीं होता है। पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता, याजक और राजा, और उनके साथ-साथ आरम्भिक कलीसिया के सेवक पवित्र आत्मा को श्रेणीबद्ध करने के ज्ञान के बिना ही उसमें होकर कार्य करते थे। इसके अतिरिक्त, चूंकि आत्मा के वरदानों को हमारे लिऐ नये नियम में श्रेणीबद्ध किया गया है, यह कुछ ऐसा है जिसके बारे में परमेश्वर हमें समझाना चाहता है। निस्संदेह पौलुस ने लिखा, ''हे भाइयो, मैं नहीं चाहता कि तुम आत्मिक वरदानों के विषय में अज्ञात रहो'' (1कुरि. 12:1)।

श्रेणीबद्ध नौ वरदान

The Nine Gifts Categorized

आत्मा के नौ वरदानों को आधुनिक समय में तीन समूहों में श्रेणीबद्ध किया गया है : (1) बोलने का वरदान, जो हैं : अनेक प्रकार भी भाषा, भाषाओं का अर्थ बताना, और भविष्यद्वाणी; (2) प्रकाशन के वरदान, जो हैं : बुद्धि का वचन, ज्ञान का वचन, और आत्माओं की परख; और (3) सामर्थ के वरदान, जो हैं : चमत्कार के कार्य, विशेष विश्वास, और चंगाई के वरदान। इनमें से तीन किसी चीज़ के बारे में कुछ *कहते* हैं; इन में से तीन कुछ *प्रगट* करते हैं; और इनमें से तीन कुछ *करते* हैं। ये सभी वरदान पुरानी वाचा के अन्तर्गत विभिन्न तरह के वरदानों और भाषाओं का अर्थ बताने के साथ व्यक्त किये गए थे। ये दोनों नये नियम में विशिष्ट हैं।

नया नियम किसी भी ''सामर्थ के वरदान'' के उचित प्रयोग के संबन्ध में और ''प्रकाशन के वरदानों'' के प्रयोग के संबन्ध में कोई निर्देश नहीं देता है। तौभी, ''बोलने के वरदान'' के उचित प्रयोग के संबन्ध में पौलुस द्वारा विशिष्ट निर्देश दिया गया है, और इसका कारण संभवत: इसका दो तरफा होना है।

सर्वप्रथम, बोलने के वरदान वे हैं जो अक्सर कलीसिया समूह में प्रगट होते हैं जबकि प्रकाशन के वरदान बहुत कम ही प्रगट होते हैं और ''सामर्थ के वरदान'' सबसे कम प्रगट होते हैं। इसलिए हमें उन वरदानों के संबन्ध में अधिक निर्देशों की आवश्यकता होगी जो प्राय: कलीसियाई सभाओं में प्रगट होते हैं।

दूसरा, बोलने वाले वरदान में मानव सहयोग की ज़रूरत सबसे अधिक प्रतीत होती है, और, इसी कारण, ये वरदान ऐसे हैं जिनका प्राय: गलत प्रयोग किया जाता है। चंगाई के वरदान को नष्ट करने की तुलना में एक भविष्यवाणी का नाश करना सरल होता है।

आत्मा की इच्छानुसार
As the Spirit Wills

यह जानना महत्वपूर्ण है कि आत्मा के वरदान आत्मा की इच्छा से दिये गए हैं न कि किसी व्यक्ति की इच्छा पर। बाइबल इसे स्पष्ट करती है :

> परन्तु ये सब प्रभावशाली कार्य वही एक आत्मा करवाता है, और *जिसे जो चाहता है* वह बांट देता है (1 कुरि. 12:11, पर बल दिया गया है)।
>
> और साथ ही *परमेश्वर भी अपनी इच्छा के अनुसार* चिन्हों और अद्‌भुत कामों, और नाना प्रकार के सामर्थ के कामों और पवित्र आत्मा के वरदानों के बांटने के द्वारा इस की गवाही देता रहा (इब्रा. 2:4, पर बल दिया गया है)।

एक व्यक्ति एक विशिष्ट प्रकार के वरदान में बार-बार प्रयोग किया जा सकता है, लेकिन किसी के भी पास सभी वरदानों का *अधिकार* नहीं होता। एक चमत्कार के कार्य के लिए आपका एक बार प्रयोग किया जाना यह संकेत नहीं देता कि आप जब चाहें चमत्कार का कार्य कर सकते हैं; न ही इस बात की कोई गारंटी है कि आपका प्रयोग उसी चमत्कार के लिए फिर से किया जाएगा।

हम प्रत्येक वरदान के संबन्ध में कुछ बाइबल उदाहरणों का संक्षिप्त रूप से अध्ययन और विचार करेंगे। तौभी, स्मरण रखें कि परमेश्वर अपने अनुग्रह और सामर्थ को असंख्य तरीकों से व्यक्त कर सकता है, अत: यह कहना असंभव होगा कि एक बार में एक वरदान किस तरह से कार्य करेगा। इसके अतिरिक्त, पवित्रशास्त्र में नौ आत्मिक वरदानों को कहीं भी परिभाषित नहीं किया गया है-उन सभी के अपने नाम हैं। अत: हम बाइबल में उदाहरणों के देखकर यह निर्धारित करने का प्रयास कर सकते हैं कि एक व्यक्ति के पास कौन से नाम का वरदान है, उन वरदानों की भिन्नता को बताते हुए। क्योंकि ऐसे बहुत से तरीके हैं जिनसे पवित्र आत्मा स्वयं को अलौकिक वरदानों के द्वारा प्रयोग कर सकता है, इसे अपनी सीमाओं के भीतर निश्चित करना बुद्धिमत्तापूर्ण नहीं होगा। कुछ वरदान अन्य कई वरदानों के साथ मिलकर कार्य करते हैं। इन पंक्तियों में पौलुस ने लिखा :

> वरदान तो *कई प्रकार* के हैं, परन्तु आत्मा एक ही है। और सेवा भी *कई प्रकार* की है, परन्तु प्रभु एक ही है। और प्रभावशाली कार्य *कई प्रकार* के हैं, परन्तु परमेश्वर एक ही है, जो सब में हर प्रकार का प्रभाव उत्पन्न करता है। किन्तु सब के लाभ पहुंचाने के लिये हर एक को आत्मा का प्रकाश दिया जाता है (1कुरि. 12:4-7, पर बल दिया गया है)।

सामर्थ के वरदान
The Power Gifts

1) चंगाई के वरदान : चंगाई के वरदानों में संभवत: बीमार लोगों को चंगा करने के लिए कुछ होता है। शारीरिक रूप से बीमार लोगों को चंगा करने के लिए उन्हें प्राय: अलौकिक प्रतिभा के रूप में देखा जाता है। मुझे इस बारे में प्रश्न करने का कोई कारण दिखाई भी नहीं देता। पिछले अध्याय में हमने बेतहसदा कुण्ड के निकट पड़े असहाय व्यक्ति को यीशु द्वारा चंगा किये जाते हुए चंगाई के उदाहरण के व्यक्त किये जाने के एक नमूने पर विचार किया था(देखें यूहन्ना 5:2-17)।

परमेश्वर ने सीरिया के नामान नामक कोढ़ी को चंगा करने के लिए एलीशा का प्रयोग किया, नामान एक मूर्तिपूजक था (देखें 2 राजा 5:1-14)। लूका 4:27 में नामान की चंगाई से संबन्धित यीशु के शब्दों के आधार पर हमने यह सीखा कि एलीशा जब चाहे किसी भी कोढ़ी को चंगा नहीं कर सकता था। वह अचानक ही नामान को यर्दन नदी में सात बार डुबकी लगाने को कहने के लिए अलौकिक रूप से प्रेरित हुआ था, और जब नामान ने आज्ञा का पालन किया, वह अपने कोढ़ से शुद्ध हो गया।

परमेश्वर ने चंगाई के वरदान द्वारा सुन्दर द्वार पर बैठे विकलांग व्यक्ति को चंगा करने के लिए पतरस का प्रयोग किया (प्रेरित. 3:1-10)। न केवल विकलांग व्यक्ति चंगा हुआ था, बल्कि अलौकिक चिन्ह बहुत से लोगों को पतरस के होठों से सुसमाचार को सुनने के लिए निकट लेकर आए थे, और उस दिन पांच हज़ार लगभग के लोग कलीसिया में जुड़ गए थे। चंगाई के वरदानों ने लोगों को चंगा करने के साथ-साथ लोगों को मसीह की निकटता में लाने का दोहरा कार्य किया।

पतरस ने उस दिन वहां एकत्रित लोगों को संदेश देते हुए कहा था :

> हे इस्राएलियो, तुम इस मनुष्य पर क्यों अचम्भा करते हो, और हमारी ओर क्यों इस प्रकार देख रहे हो, कि मानो हम ही ने अपनी सामर्थ या भक्ति से इसे चलता फिरता कर दिया? (प्रेरित. 3:12)।

पतरस यह जान गया था कि उसके भीतर पाई जाने वाली किसी सामर्थ या उसकी महान पवित्रता के कारण ऐसा नहीं था कि परमेश्वर ने उसे एक विकलांग व्यक्ति को चंगा करने के लिए प्रयोग किया था। स्मरण रहे कि पतरस ने इस चमत्कार के दो माह पहले ही यीशु को पहचानने से इन्कार कर दिया था। प्रेरितों के काम पुस्तक के प्रथम पृष्ठों में पाई जाने वाली इस सच्चाई के कारण कि परमेश्वर ने पतरस का प्रयोग इतने अधिक चमत्कारिक रूप में किया, हमारे भरोसे को बढ़ाने वाला होना चाहिए कि परमेश्वर हमारा प्रयोग भी अपनी इच्छा के अनुसार करेगा।

जब पतरस ने यह बताने का प्रयास किया कि व्यक्ति कैसे चंगा हुआ था, तो यह इसके प्रतिकूल था कि उसने इसे ''चंगाई के दान'' की श्रेणी में रखा था। पतरस केवल इतना जानता था कि उसके और यूहन्ना के विकलांग व्यक्ति के पास से गुज़रते हुए उसने स्वयं को उस व्यक्ति की चंगाई के लिए विश्वास से अभिषिक्त पाया। इसलिए उसने व्यक्ति को यीशु के नाम में चलने की आज्ञा दी, और उसका दहिना हाथ पकड़कर उसे उठाया। विकलांग व्यक्ति ने चलना, कूदना और परमेश्वर की स्तुति करना आरम्भ कर दिया।'' परतस ने इसे इस तरह से कहा :

> और उसी के नाम ने, उस विश्वास के द्वारा जो उसके नाम पर है, इस मनुष्य को जिसे तुम देखते हो और जानते हो सामर्थ दी है; और निश्चय उसी विश्वास ने जो उसके द्वारा है, इसको तुम सब के सामने बिलकुल भला चंगा कर दिया है (प्रेरित. 3:16)।

एक विकलांग व्यक्ति के हाथ को पकड़कर उठाना और उसे चलने के लिए कहने को एक विशेष प्रकार के विश्वास की ज़रूरत होगी। इस विशिष्ट चंगाई के वरदान के साथ-साथ विश्वास की भी आवश्यकता होगी।

इस वरदान का द्विवचन में होने कारण (अर्थात् चंगाई के वरदान) यह है कि बहुत से वरदान हैं जो भिन्न तरह की बीमारियों को चंगा करते हैं। जिनका प्रयोग इन चंगाई के वरदानों में बार-बार किया गया है, वे यह पाते हैं कि कुछ विशिष्ट तरह की बीमारियां उनकी सेवकाई में अन्य बीमारियों की अपेक्षा अधिक ठीक होती हैं। उदाहरण के लिए, फिलिप्पुस ने पक्षाघात और लंगड़े के रोगियों को चंगा करने में अधिक सफलता का अनुभव किया (प्रेरित. 8:7)। उदाहरण के लिए, पिछली शताब्दी के कुछ ऐसे प्रचारक हैं जिन्हें अंधेपन, बहरेपन या हृदय की समस्याओं में अधिक सफलता मिली।

2) विश्वास का वरदान और चमत्कार के कार्य : विश्वास का वरदान चमत्कार के कार्यों के वरदान समान प्रतीत होता हैं। दोनों वरदानों में अभिषिक्त व्यक्ति अचानक ही असंभव के लिए विश्वास को प्राप्त करता है। दोनों के बीच की भिन्नता का वर्णन प्राय: इस तरह से किया जाता है: विश्वास के दान में, अभिषिक्त व्यक्ति को अपने लिए चमत्कार *प्राप्त* करने को विश्वास दिया जाता है, जबकि चमत्कार के कार्यों के दान में, व्यक्ति को दूसरे के लिए चमत्कारी *कार्य* करने को विश्वास दिया जाता है।

विश्वास के वरदान का उल्लेख ''विशिष्ट विश्वास'' के रूप में दिया गया है क्योंकि यह अचानक से ऐसे विश्वास का डाला जाना है जो *साधारण* विश्वास से भिन्न होता है। साधारण विश्वास परमेश्वर की प्रतिज्ञा को सुनने से आता है, जबकि विशिष्ट विश्वास अचानक ही पवित्र आत्मा द्वारा डाला जाता है। इस विशिष्ट विश्वास का अनुभव करने वालों का कहना है कि जो चीज़ें उन्हें असंभव लगती थीं वे अब संभव हो

जाती हैं, और वे इस पर *संदेह करना असंभव* पाते हैं। ऐसा ही चमत्कार के कार्य के वरदान के साथ सही होगा।

दानिय्येल के तीनों मित्रों-शद्रक, मेशक, अबेदनगो की कहानी इस बात का एक सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है कि ''विशिष्ट विश्वास'' संदेह करने को कैसे अंसभव बनाता है। जब राजा की मूर्ति के सामने झुकने से इन्कार करने के कारण उन्हें आग की भट्टी में डाला गया था, तब उन सभी को विशिष्ट विश्वास दिया गया था। आग की लपटों से बच निकलने के लिए साधारण विश्वास से अधिक की आवश्कता होती है! राजा के सामने इन तीनों ने जिस विश्वास को दिखाया था, आइये उस पर विचार करें:

> शद्रक, मेशक और अबेदनगो ने राजा से कहा, ''हे नबूकदनेस्सर, इस विषय में तुझे उत्तर देने का हमें कुछ प्रयोजन नहीं जान पड़ता। हमारा परमेश्वर जिसकी हम उपासना करते हैं वह हम को उस धधकते हुए भट्टे की आग से बचाने की शक्ति रखता है; वरन हे राजा, *वह हमें तेरे हाथ से भी छुड़ा सकता है।* परन्तु, यदि नहीं, तो हे राजा तुझे मालूम हो कि हम लोग तेरे देवता की उपासना नहीं करेंगे, और न तेरी खड़ी कराई हुई सोने की मूरत को दण्डवत् करेंगे'' (दानि. 3:16-18, पर बल दिया गया है)।

ध्यान दें कि उनके भट्टी में डाले जाने से पहले ही वरदान कार्यरत् था। उनके मनों में इस बात का कोई संदेह नहीं था कि परमेश्वर उन्हें छुड़ा लेगा।

एलिय्याह ने उस समय में विशिष्ट विश्वास में होकर कार्य किया जब दुष्ट राजा अहाब के राज्य में आए साढ़े तीन साल के अकाल में उसे प्रतिदिन कौवों के द्वारा भोजन खिलाया जाता था (देखें 2 राजा 17:1-6)। परमेश्वर द्वारा आपको सुबह और शाम भोजन खिलाने हेतु पक्षियों का प्रयोग किये जाने को साधारण विश्वास से अधिक की आवश्यकता होती है। यद्यपि परमेश्वर ने अपने वचन में हमसे कहीं भी यह प्रतिज्ञा नहीं की है कि कौवे हमारे प्रतिदिन के भोजन को लेकर आएंगे, तथापि हम अपनी आवश्यकता के पूरा होने हेतु परमेश्वर पर भरोसा करने को साधारण विश्वास का प्रयोग कर सकते हैं-क्योंकि इसकी प्रतिज्ञा की गई है। (देखें मत्ती 6:25-34)।

चमत्कार के कार्य मूसा की सेवकाई में बार-बार होते थे। लाल समुद्र को विभाजित करते समय उसने इसी दान में होकर कार्य किया था (देखें निर्ग. 14:13-31) और उस समय भी जब बहुत सी विपत्तियां मिस्र पर आई थीं।

यीशु ने कुछ मछलियों और कुछ रोटियों को बढ़ाते हुए 5000 की भीड़ को भोजन खिलाने के द्वारा इसी चमत्कार के कार्य में होकर कार्य किया था (देखें मत्ती 14:15-21)।

जिस समय पौलुस ने इलीमास नामक टोन्हे को इस कारण से कुछ समय के लिए

अंधा कर दिया था क्योंकि वह कुप्रुस में उसकी सेवकाई में बाधक बन रहा था, यह भी चमत्कार के कार्य का एक उदाहरण था (देखें प्रेरित. 13:4-12)।

प्रकाशन के वरदान
The Revelation Gifts

1) ज्ञान का वचन और बुद्धि का वचन : ज्ञान के वचन के वरदान को अक्सर भूतकाल या वर्तमान की जानकारी के रूप में अलौकिक रूप से दिया जाता है। सभी तरह के ज्ञान का स्वामी, परमेश्वर, कई अवसरों पर उस ज्ञान के छाटे से भाग को ही देगा, शायद इसी कारण इसे ज्ञान का *वचन* कहा जाता है। एक शब्द एक वाक्य का विभाजित भाग होता है, और ज्ञान का वचन परमेश्वर के ज्ञान का एक विभाजित अंश होगा।

बुद्धि का वचन ज्ञान के वचन के समानान्तर है, लेकिन इसे प्राय: *भविष्य* की घटनाओं के अचानक ही अलौकिक वितरण के रूप में जाना जाता है। *बुद्धि* के विषय का संबन्ध सामान्यता भविष्य से जुड़ी चीज़ों से होता है। पुन:, ये परिभाषाएं किसी भी तरह से अव्यावहारिक हैं।

आइये ज्ञान के वचन के एक पुराने नियम के उदाहरण को देखें। सीरिया के नामान नामक कोढ़ी को शुद्ध करने के पश्चात् नामान ने आभार-पूर्ति के रूप में बड़ी संख्या में एलीशा को धन देना चाहा। एलीशा ने धन लेने से इंकार कर दिया, ताकि कोई यह न समझे कि नामान की चंगाई परमेश्वर की ओर से होने की अपेक्षा खरीदी गई थी। तथापि, एलीशा के सेवक गेहजी ने इस अवसर को व्यक्तिगत रूप से धनी होने के रूप में लिया, और नामान को जो धन देने का प्रस्ताव रखा गया था उसमें से उसने कुछ गुप्त रूप से ले लिया। धोखे के साथ प्राप्त हुई चांदी को छिपाने के पश्चात् गेहजी एलीशा के सम्मुख गया। उसके बाद हम पढ़ते हैं,

> एलीशा ने उस से पूछा, ''हे गेहजी, तू कहां से आता है?'' उसने कहा, ''तेरा दास तो कहीं नहीं गया।'' उसने उससे कहा, ''जब वह पुरुष इधर मुंह फेरकर तुझ से मिलने को अपने रथ से उतरा था, तब वह पूरा हाल मुझे मालूम था'' (2 राजा 5:25ब-26अ)।

परमेश्वर जो गेहजी के बुरे कार्यों के बारे में पूरी तरह से जानता था, उसने इसे अलौकिक रूप से एलीशा पर प्रगट किया। तौभी, कहानी यह स्पष्ट करती है कि एलीशा को ज्ञान के वचन पर ''स्वामित्व'' प्राप्त नहीं था; क्योंकि वह प्रत्येक चीज़ को प्रत्येक समय में नहीं जानता था। यदि ऐसा नहीं होता तो गेहजी कभी भी अपने पाप को छिपाए रखने की कल्पना नहीं कर सकता था। एलीशा चीज़ों के बारे में अलौकिक रूप से केवल तब ही जानता था जब परमेश्वर उन्हें उस पर प्रगट करता था। वरदान आत्मा की इच्छा पर कार्य करता था।

यीशु ने उस समय ज्ञान के वचन में होकर कार्य किया जब उसने कुएं पर सामरी स्त्री को बताया कि उसके पांच पति रह चुके हैं (देखें यूह. 4:17-18)।

पतरस को उस समय इस वरदान में प्रयोग किया गया था जब वह अलौकिक रूप से जानता था कि हन्ना और सफीरा मण्डली के सामने अपनी हाल ही में बेची गई ज़मीन की कीमत के बारे में झूठ बोल रहे थे (देखें प्रेरित. 5:1-11)।

बुद्धि के वचन के वरदान के लिए, हम पुराने नियम के सभी भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा इस दान की अभिव्यक्ति को बार-बार देखते हैं। जब कभी भी उन्होंने भविष्य में घटने वाली घटना की भविष्यवाणी की, बुद्धि का वचन कार्यरत् हुआ। यीशु को भी यह वरदान बार-बार दिया गया था। उसने यरुशलेम के विनाश, अपने क्रूसारोपण तथा उन घटनाओं की भविष्यवाणी की जो उसके दूसरे आगमन से पूर्व संसार में घटेंगी (देखें लूका 17:22-36, 21:6-28)।

प्रेरित यूहन्ना का प्रयोग इस दान में सताव के समय को उस पर प्रगट करने के लिये किया गया था। उसने इसका विवरण हमारे लिए पूरी प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में दिया है।

2) आत्माओं को पहचानने का वरदान : आत्माओं की परख का वरदान अलौकिक रूप से उसे देखने की योग्यता या उसकी परख करने के रूप में किया जाता है, जो कुछ आत्मिक क्षेत्र में हो रहा होता है।

एक विश्वासी की आंखों या मन से देखे गए दर्शन को आत्माओं की परख करने के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। यह वरदान एक विश्वासी को स्वर्गदूतों, दुष्टात्माओं और यहां तक कि यीशु को भी देखने की अनुमति देता है, जैसा पौलुस ने कई अवसरों पर किया था (देखें प्रेरित. 18:9-10; 22:17-21; 23:11)।

जब एलीशा और सेवक का पीछा सीरिया की सेना द्वारा किया जा रहा था, तब उन्होंने स्वयं को दोतान नामक नगर में फंसा पाया। उस समय में, एलीशा के सेवक ने नगर की दीवार के बाहर सैनिकों के झुण्ड को खड़े देखा, जिस कारण वह चिन्तित हो गया :

> उसने (एलीशा ने) कहा, ''मत डर; क्योंकि जो हमारी ओर हैं वे उनसे अधिक हैं जो उनकी ओर हैं।'' तब एलीशा ने यह प्रार्थना की है, ''हे यहोवा, इसकी आंखें खोल दे कि यह देख सके।'' तब यहोवा ने सेवक की आंखें खोल दीं, और जब वह देख सका, तब क्या देखा, कि एलीशा के चारों ओर का पहाड़ अग्निमय घोड़ों और रथों से भरा हुआ है (2 राजा 6:16-17)।

क्या आप जानते हैं कि आत्मिक घोड़ों और आत्मिक रथों पर स्वर्गदूत बैठे थे? आप एक दिन उन्हें स्वर्ग में देखेंगे, लेकिन एलीशा के सेवक को उन्हें पृथ्वी पर देखने की योग्यता दी गई।

इस वरदान के द्वारा, एक विश्वासी दुष्टात्मा को किसी भी व्यक्ति को प्रताड़ित करते हुए देख सकता है और उसमें उस दुष्टात्मा की पहचान करने की भी योग्यता होती है।

इस वरदान में केवल आत्मिक क्षेत्र में ही देखना शामिल नहीं होगा बल्कि आत्मिक क्षेत्र की किसी भी तरह की पहचान करना भी। उदाहरण के लिए, इसमें आत्मिक क्षेत्र से सुनना भी शामिल हो सकता है जैसे परमेश्वर की आवाज़।

अन्ततः, यह वरदान वैसा नहीं है जैसा कुछ लोग इसके बारे में सोचते हैं ''परखने का वरदान।'' इस तरह का वरदान होने का दावा करने वाले लोग कई बार सोचते हैं कि वे दूसरों के उद्देश्यों की भी पहचान कर सकते हैं, लेकिन इस तरह से उनके वरदान को ''आलोचना का वरदान'' या ''दूसरों का न्याय'' करने का वरदान कहा जा सकता है। सच्चाई यह है कि आपके बचाए जाने से पूर्व आपमें इस वरदान का होना संभव हो सकता है, और अब जबकि आप बचाए गए हैं, परमेश्वर आपको स्थायी रूप से इससे छुड़ाना चाहता है!

बोलने के वरदान

The Utterance Gifts

1) **भविष्यवाणी का वरदान :** भविष्यवाणी का वरदान आत्मिक प्रेरणा में वक्ता की भाषा में बोलने की अलौकिक योग्यता है। इसका आरम्भ सर्वदा इस तरह से हो सकता है, ''यहोवा ऐसा कहता है।''

यह वरदान प्रचार करने या शिक्षा देने का नहीं है। प्रचार और शिक्षा देने की प्रेरणा भविष्यवाणी का एक *घटक* हो सकती है क्योंकि वे आत्मा द्वारा अभिषिक्त होते हैं, लेकिन अपने कठोर भाव में वे भविष्यवाणी नहीं हैं। कई बार एक अभिषिक्त प्रचारक या शिक्षक तात्कालिक प्रेरणा से चीज़ों को कहेगा, जिसे कहने की योजना उसने नहीं बनाई होती, लेकिन वास्तव में यह भविष्यवाणी नहीं है, यद्यपि मैं मानता हूं कि यह *भविष्यवाणी* हो सकती है।

भविष्यवाणी का वरदान उन्नति, उपदेश और शांति देने के लिए होता है :

> परन्तु जो भविष्यद्वाणी करता है, वह मनुष्यों से उन्नति, और उपदेश और शान्ति की बातें कहता है (1 कुरि. 14:3)।

अतः भविष्यवाणी के वरदान में, स्वयं में, कोई प्रकाशन नहीं पाया जाता है। अर्थात् यह भूतकाल, वर्तमान या भविष्य के बारे में कुछ भी प्रगट नहीं करता, जैसा बुद्धि का वचन और ज्ञान का वचन करते हैं। तथापि, जैसा मैंने पहले भी कहा, आत्मा के वरदान एक दूसरे के साथ संयोजन के रूप में कार्य कर सकते हैं, और इसी तरह से बुद्धि का वचन या ज्ञान का वचन भविष्यवाणी के माध्यम से दिये जा सकते हैं।

जब कभी हम इस बारे में सुनते हैं कि कोई समूह में भविष्यवाणी को देता है जो भविष्य की घटनाओं के बारे में पहले से बताता है, तब वास्तव में हम *केवल* भविष्यवाणी को ही नहीं सुनते, हम भविष्यवाणी के वरदान के माध्यम से दिये गए बुद्धि के वचन को भी सुनते हैं। यदि कोई बाइबल में इस तरह के उपदेश को पढ़ रहा हो जैसे ''प्रभु में और उसकी सामर्थ की शक्ति में मज़बूत बनो'' और ''मैं न तो कभी तुम्हें छोड़ूगा और न ही त्यागूंगा'' तब इनके द्वारा साधारण भविष्यवाणी का स्वर बहुत अधिक होगा।

कुछ को यह स्वीकार कराया गया है कि नये नियम की भविष्यवाणी में कभी भी कुछ ''नकारात्मक'' नहीं होना चाहिए, अन्यथा यह ''उन्नति, उपदेश और शांति'' के परिमाप में सही नहीं बैठता। परमेश्वर अपने लोगों को जो कह सकता है उसे सीमित करने के लिए, परमेश्वर को केवल वही कहने की अनुमति देना जिसे वे ''सकारात्मक'' मानते हैं, बेशक, इसके लिए उन्हें झिड़का ही क्यों न जाए, यह स्वयं को परमेश्वर से ऊंचा उठाना होगा। झिड़कना *उन्नति* और *उपदेश* दोनों की ही श्रेणी में आता है। यूहन्ना के प्रकाशितवाक्य में वर्णित एशिया की सातों कलीसियाओं को दिये प्रभु के संदेश में मैंने ध्यान दिया कि उनमें झिड़कने का एक तत्व पाया जाता है। क्या हम उन्हें निकाल दें? मैं ऐसा नहीं सोचता।

2) अन्य प्रकार की भाषाओं का दान और भाषाओं का अर्थ बताना : *अन्य प्रकार की भाषाओं* का वरदान एक ऐसी भाषा में बोलने की अलौकिक योग्यता है जो बोलने वाले के लिए अनजानी है। यह वरदान *भाषाओं का अर्थ बताने* के साथ जुड़ा है, जो कही गई अज्ञात भाषा का अर्थ बताने की योग्यता है।

इस वरदान को भाषाओं का *अर्थ बताना* कहा जाता है, न कि भाषाओं का *अनुवाद करना।* अत: हमें संदेश के प्रत्येक शब्द के अनुवाद किये जाने की आशा नहीं करनी चाहिए। इसी कारण ''अन्य भाषाओं में संदेश'' का छोटा होना संभव है, इसके विपरीत कि एक लम्बी व्याख्या होने का।

भाषाओं के अर्थ बताने का वरदान भविष्यवाणी के बहुत समान है क्योंकि इसमें स्वयं में कोई प्रकाशन नहीं होता और यह सामान्यता उन्नति, उपदेश और शांति के लिए होता है। 1 कुरिन्थियों 14:5 के अनुसार, हम कह सकते हैं कि अन्य भाषाओं का अर्थ बताना भविष्यवाणी के समानान्तर है :

> यदि अन्य अन्य भाषा बोलने वाला कलीसिया की उन्नति के लिये
> अनुवाद न करे तो भविष्यद्वाणी करने वाला उससे बढ़कर है।

जैसा मैंने पहले भी कहा, बाइबल में इस संबन्ध में कोई निर्देश नहीं दिया गया है कि सामर्थ के वरदानों का संचालन कैसे करें, इस बारे में बहुत ही कम निर्देश दिये गए हैं, परन्तु बोलने के वरदानों के संचालन के संबन्ध में कुरिन्थियों की कलीसिया में कुछ भ्रम था, पौलुस ने इस विषय पर पूरा चौदह अध्याय सौंप दिया है।

अन्य भाषाओं के बोलने के उचित प्रयोग के संबन्ध में सबसे प्रमुख समस्या है, क्योंकि पवित्र आत्मा के बपतिस्मे से संबन्धित अध्याय में हम पहले भी देख चुके हैं कि पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाए विश्वासी में जब चाहे किसी भी समय अन्य भाषा में प्रार्थना करने की योग्यता पाई जाती है। कुरिन्थी अपनी कलीसियाई सेवा में बहुत अधिक अन्य भाषा में बोल रहे थे, लेकिन इनमें से अधिकांश व्यवस्था में नहीं थे।

अन्य भाषाओं के विविध प्रयोग

The Different Uses of Other Tongues

यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि हम अन्य अन्य भाषा के सार्वजनिक प्रयोग और निजी प्रार्थना के बीच बनी भिन्नता को समझें। यद्यपि प्रत्येक पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया विश्वासी किसी भी समय में अन्य भाषा बोल सकता है, तथापि इसका अर्थ यह नहीं निकलता कि परमेश्वर विविध तरह की भाषाओं के सार्वजनिक दान में उसका प्रयोग करेगा। अन्य भाषा में बोलने का *प्राथमिक* प्रयोग प्रत्येक विश्वासी के निजी आराधना जीवन में होता है। तथापि, कुरिन्थी एक साथ मिलकर अर्थ बताए बिना अन्य भाषा में बोल रहे थे, निस्संदेह इससे न तो किसी को सहायता मिली थी और न ही इससे किसी की उन्नति हुई थी (देखें 1 कुरि. 14:6-12,16-19, 23, 26-28)।

अन्य भाषा के सार्वजनिक प्रयोग और निजी प्रयोग के बीच अन्तर करने का एक तरीका अन्य भाषा में *प्रार्थना* करते हुए निजी प्रयोग को और अन्य भाषा में *बोलते* हुए सार्वजनिक प्रयोग को वर्गीकृत करना है। कुरिन्थियों को लिखे अपने पहले पत्र के चौदहवें अध्याय में पौलुस दोनों के प्रयोगों का वर्णन करता है। अन्तर क्या है?

जिस समय हम अन्य भाषा में *प्रार्थना* करते हैं, हमारी आत्मा परमेश्वर से प्रार्थना कर रही होती है (देखें 1कुरि. 14:2,14)। तौभी, जब कोई अचानक से अन्य भाषा के विविध प्रकार के वरदानों से अभिषिक्त होता है, तो यह परमेश्वर की ओर *से* मण्डली को संदेश होता है (देखें 1 कुरि. 14:5), और अर्थ बताने पर इसे समझ लिया जाता है।

पवित्रशास्त्र के अनुसार, *हम* अपनी इच्छा से अन्य भाषा में प्रार्थना कर सकते हैं (देखें 1 कुरि. 14:15), लेकिन विविध प्रकार की अन्य भाषाओं का वरदान केवल *पवित्र आत्मा* की इच्छा पर ही कार्य करता है (देखें 1 कुरि. 12:11)।

विविध प्रकार की अन्य भाषाओं का वरदान अन्य भाषाओं का अर्थ बताने के वरदान के साथ जुड़ा होता है। तथापि, अन्य भाषा में प्रार्थना करने के निजी प्रयोग का सामान्यता अर्थ नहीं बताया जाता। पौलुस ने कहा कि जब उसने अन्य भाषा में प्रार्थना की तब उसकी बुद्धि ने काम नहीं किया (देखें 1 कुरि. 14:14)।

जब एक व्यक्ति अन्य भाषा में प्रार्थना करता है तब वह केवल *अपनी* ही उन्नति करता है (देखें कुरि. 14:4), लेकिन जब विविध प्रकार की अन्य भाषाओं के वरदान के साथ भाषाओं का अर्थ बताने का वरदान कार्य करता है, तो इससे *पूरी मण्डली* की उन्नति होती है (देखें 1 कुरि. 14:4ब-5)।

प्रत्येक विश्वासी को प्रभु के साथ अपनी दैनिक सहभागिता के रूप में प्रतिदिन अन्य भाषा में प्रार्थना करनी चाहिए। अन्य भाषा में प्रार्थना करने की एक अद्‌भुत चीज़ यह है कि इसके लिए आपकी बुद्धि की आवश्यकता नहीं होती। इसका अर्थ यह है कि जिस समय आपका मस्तिष्क किसी और काम में लगा हो, आप उस समय में भी अन्य भाषा में प्रार्थना कर सकते हैं। पौलुस ने कुरिन्थियों से कहा, ''मैं अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं, कि मैं *तुम सबसे अधिक* अन्य अन्य भाषा में बोलता हूं'' (1 कुरि. 14:18, पर बल दिया गया है)। समस्त कुरिन्थ की कलीसिया से बढ़कर होने के लिए हो सकता है कि उसने अपना अधिकांश समय अन्य भाषा में बोलने में बिताया हो।

पौलुस ने यह भी लिखा कि जब हम अन्य भाषा में प्रार्थना करते हैं तो हम कई बार ''परमेश्वर की आशीष में होते हैं'' (1कुरि. 14:16-17)। तीन बार मेरे द्वारा की गई प्रार्थना को वहां उपस्थित व्यक्ति के द्वारा समझा गया जो उस भाषा को जानता था, जिसमें मैं प्रार्थना कर रहा था। तीनों बार मैं जापानी भाषा में बोल रहा था। एक बार मैंने प्रभु से जापानी भाषा में कहा, ''तू कितना भला है।'' दूसरी बार मैंने कहा, ''बहुत धन्यवाद।'' एक दूसरे अवसर पर मैंने कहा, ''जल्दी आ; जल्दी आ; मैं इन्तज़ार कर रहा हूं।'' क्या यह अद्‌भुत नहीं है? मैंने जापानी भाषा के एक शब्द को भी नहीं सीखा था, लेकिन तीन बार परमेश्वर ने मुझे जापानी भाषा में आशीषित किया!

अन्य भाषा में बोलने के लिये पौलुस के निर्देश

Paul's Instructions for Speaking in Tongues

कुरिन्थ की कलीसिया को दिये गए पौलुस के निर्देश बहुत विशिष्ट थे। किसी भी जनसमूह में, केवल दो या तीन लोगों को ही अन्य भाषा में बोलने की अनुमति थी। उन सभी को एक साथ नहीं बोलना था, बल्कि प्रतीक्षा करते हुए अपनी बारी पर उन्हें बोलना है (देखें 1 कुरि. 14:27)।

पौलुस का इससे यह अभिप्राय नहीं था कि केवल तीन ''अन्य भाषा में संदेश'' को ही अनुमति थी, बल्कि यह कि किसी भी सेवा में दो या तीन लोगों से अधिक को अन्य भाषा में नहीं बोलना चाहिए। कुछ का यह सोचना है कि यदि वहां तीन लोगों से अधिक का विविध प्रकार की अन्य भाषा बोलने में प्रयोग किया गया हो, तो उनमें से कोई भी एक ''अन्य भाषा में उस संदेश'' को दे सकता है जिसे आत्मा कलीसिया में व्यक्त करना चाहता हो। यदि पवित्र आत्मा एक जनसमूह में विविध

प्रकार की अन्य भाषा के तीन वरदानों से अधिक न दे तो वहां पौलुस को इस तरह के निर्देश देने की आवश्यकता न होगी।

ऐसा ही अन्य भाषाओं का अर्थ बताने के साथ भी सत्य हो सकता है। ऐसा विचार किया जाता है कि जन समूह में एक से अधिक व्यक्ति आत्मा के लिए फल उत्पन्न करते हुए ''अन्य भाषा में संदेश'' देते हैं। इस तरह के लोगों को ''अर्थ बताने वाला'' माना जाता है (1 कुरि. 14:28), क्योंकि भाषाओं का अर्थ बताने में उनका प्रयोग बार बार होगा। यदि यह सही है, तो शायद पौलुस निर्देश देते हुए इसी का उल्लेख कर रहा था, ''एक व्यक्ति अनुवाद करे'' (1कुरि. 14:27)। संभवत: वह यह नहीं कह रहा था कि केवल एक व्यक्ति को अन्य भाषा में दिये गए *सभी* संदेशों का अर्थ बताना चाहिए; इसके विपरीत वह उसी संदेश के ''प्रतियोगी अनुवादक'' के विरुद्ध चेतावनी दे रहा था। यदि एक अनुवादक ने अन्य भाषा के एक वरदान का अनुवाद किया, तो दूसरे अनुवादक को उसी संदेश का अनुवाद करने की अनुमति नहीं थी, चाहे वह यह सोचता हो कि वह एक अच्छा अनुवाद कर सकता है।

सामान्य रूप में कहा जाए तो कलीसियाई सभाओं में प्रत्येक चीज़ ''उचित रूप से और व्यवस्थित तरीके'' से होनी चाहिए। वे एक साथ मिलकर खिचड़ी न बनाएं, न भ्रम उत्पन्न करें और प्रतियोगी रूप से बोले भी नहीं। इसके अतिरिक्त, विश्वासियों को उन अविश्वासियों के प्रति संवेदनशील होना चाहिए जो कि हो सकता है उनकी सभा में शामिल हों, जैसा पौलुस ने लिखा भी है :

> सो यदि कलीसिया एक जगह इकट्ठी हो, और सब के सब अन्य अन्य भाषा बोलें, और अनपढ़े या अविश्वासी लोग भीतर आ जाएं तो क्या वे तुम्हें पागल न कहेंगे? (1 कुरि. 14:23)।

कुरिन्थ की कलीसिया की सबसे बड़ी समस्या थी-हर कोई एक साथ अन्य भाषा में बोल रहा था, और अक्सर उसका अर्थ नहीं बताया जाता था।

प्रकाशन के वरदानों के संबन्ध में कुछ निर्देश
Some Instruction Concerning Revelation Gifts

पौलुस ने ''प्रकाशन के वरदानों'' की भविष्यद्वक्ताओं द्वारा अभिव्यक्ति किये जाने के संबन्ध में कुछ निर्देश दिये :

> भविष्यद्वक्ताओं में से दो या तीन बोलें, और शेष लोग उनके वचन को परखें। परन्तु यदि दूसरे पर जो बैठा है, कुछ ईश्वरीय प्रकाश हो, तो पहला चुप हो जाए। क्योंकि तुम सब एक एक करके भविष्यद्वाणी कर सकते हो ताकि सब सीखें, और सब शक्ति पाएं। और भविष्यद्वक्ताओं की आत्मा भविष्यद्वक्ताओं के वश में है।

क्योंकि परमेश्वर गड़बड़ी का नहीं, परन्तु शांति का कर्त्ता है; जैसा
पवित्र लोगों की सब कलीसियाओं में है (1 कुरि. 14:29-33)।

कुरिन्थ की देह में जिस तरह से कुछ सदस्य ऐसे थे जिनका भाषाओं का अर्थ बताने में बार-बार प्रयोग किया था जिन्हें ''अनुवादक'' के रूप में जाना जाता था, उसी तरह से वहां कुछ ऐसे भी थे जिनका प्रयोग बार-बार भविष्यवाणी और प्रकाशन के वरदान में किया गया था, जिन्हें ''भविष्यद्वक्ताओं'' के रूप में जाना जाता था! ये भविष्यद्वक्ता पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं या यहां तक कि नये नियम के अगबुस नामक भविष्यद्वक्ता के समान नहीं थे (देखें प्रेरित. 11:28; 21:10)। इसके विपरीत, उनकी सेवकाइयों को उनकी स्थानीय देह में सीमित किया गया था।

कलीसियाई सभा में तीन से अधिक भविष्यद्वक्ताओं के होने पर पौलुस पुनः सीमाओं को लगाता है, विशेष रूप से भविष्यद्वाणी की सेवकाई को ''दो या तीन भविष्यद्वक्ताओं'' तक सीमित करते हुए। वह पुनः बताता है कि आत्मा द्वारा सभा में आत्मिक वरदानों के दिये जाने पर, एक से अधिक व्यक्ति को उन वरदानों को प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिये। ऐसा न होने पर, पौलुस के निर्देशों का परिणाम आत्मा द्वारा वरदानों के दिये जाने पर यह होगा कि उनका आनन्द देह द्वारा कभी नहीं लिया जाएगा, क्योंकि उसने सीमित किया था कि कितने भविष्यद्वक्ता बोल सकते हैं।

तीन से अधिक भविष्यद्वक्ताओं के उपस्थित होने पर, अन्य न बोलते हुए भी, दूसरों का न्याय कर सकते हैं कि उन्होंने क्या कहा। यह उनकी इस पहचान करने की योग्यता को भी इंगित करेगा कि आत्मा क्या कह रहा था और यह संभावित रूप से इस पर लागू हो सकता है कि वे आत्मा द्वारा उन वरदानों के प्रयोग में स्वयं इस्तेमाल किये जा सकते हैं जिसे दूसरे भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा व्यक्त किया गया था, अन्यथा वे केवल एक सामान्य तरीके में भविष्यद्वाणियों और प्रकाशनों का न्याय करेंगे, इस बात को निश्चित करते हुए कि वे परमेश्वर द्वारा दिये गए प्रकाशन से सहमत थे (जैसा पवित्रशास्त्र में है), एक ऐसी चीज़ जिसे कोई भी परिपक्व विश्वासी कर सकता है।

पौलुस ने कहा कि ये भविष्यद्वक्ता शृंखलाबद्ध होकर भविष्यवाणी कर सकते हैं (देखें 1 कुरि. 14:31) और यह कि ''भविष्यद्वक्ताओं की आत्मा भविष्यद्वक्ताओं के वश में है'', (1कुरि. 14:32), यह संकेत देते हुए कि प्रत्येक भविष्यद्वक्ता दूसरे का अर्थ बताने से स्वयं को दूर रख सकता है, चाहे आत्मा की ओर से दी गई भविष्यद्वाणी या प्रकाशन को मण्डली के साथ बांटना हो। यह दिखाता है कि आत्मा एक सभा में एक ही समय में कई भविष्यद्वक्ताओं को वरदान दे सकता है, लेकिन प्रत्येक भविष्यद्वक्ता को देह के साथ अपने प्रकाशनों और भविष्यवाणियों के बांटे जाने के साथ नियंत्रण में रहना चाहिए और वह रह भी सकता है।

यह किसी भी बोलने वाले वरदान के संबन्ध में भी सत्य हो सकता है जो परमेश्वर

की ओर से किसी अन्य विश्वासी के द्वारा व्यक्त हुआ हो। यदि एक व्यक्ति अन्य भाषा में एक संदेश या भविष्यद्वाणी को प्राप्त करता है, तो वह सभा में उपयुक्त समय तक इसे रोके रख सकता है। अपनी भविष्यद्वाणी को देने के लिए किसी और की भविष्यद्वाणी या शिक्षा का अर्थ बताना गलत होगा।

जब पौलुस ने कहा ''तुम सब एक एक करके भविष्यद्वाणी कर सकते हो'' (1कुरि. 14:31), स्मरण रखें कि वह उन भविष्यद्वक्ताओं के संदर्भ में बोल रहा था जिन्होंने भविष्यद्वाणियों को प्राप्त किया था। कुछ ने यह कहते हुए दुर्भाग्यवश पौलुस के शब्दों को संदर्भ से बाहर ले लिया था कि *प्रत्येक* विश्वासी देह की *प्रत्येक* सभा में भविष्यद्वाणी कर सकता है। भविष्यद्वाणी का वरदान आत्मा की इच्छा पर दिया जाता है।

आज जितना अधिक से अधिक हो सके, कलीसिया को पवित्र आत्मा की सहायता, सामर्थ, उपस्थिति और वरदानों की ज़रूरत है। पौलुस ने कुरिन्थ के विश्वासियों को निर्देश दिया कि ''आत्मिक वरदानों की भी धुन में रहो, विशेष करके यह कि भविष्यद्वाणी करो'' (1 कुरि. 14:1)। यह संकेत देता है कि आत्मा के वरदानों की अभिव्यक्ति के साथ हमारे इच्छा करने के स्तर का भी कुछ लेना देना है, अन्यथा पौलुस ने इस तरह के निर्देश न दिये होते। परमेश्वर की महिमा के लिए प्रयोग किये जाने की इच्छा करने वाला शिष्य-निर्माता सेवक, निश्चय ही आत्मिक वरदानों की भी इच्छा करेगा और अपने शिष्यों को भी वैसा ही करने की शिक्षा देगा।